पाठ–9

भारत वर्ष की उन्नति कैसे हो सकती है

विधा – निबन्ध (ददरी मेले में दिया गया भाषण का अंश)

लेखक – भारतेन्दु हरिशचन्द्र

जीवन–परिचय – आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रवर्तक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र माँ सरस्वती की आराधना में जीवन भर लगे रहे। 34 वर्ष की अल्प आयु में उनका स्वर्गवास हो गया।

लेखक की रचनाएँ – नाटक – 'नील देवी', 'अंधेरनगरी', 'वैदिकी हिंसा–हिंसा न भवति', 'भारत दुर्दशा', 'चंद्रावली', 'मुद्राराक्षस', 'सत्य हरिश्चन्द्र', 'पाखण्ड विडम्बना', 'विद्यासुन्दर', 'धनंजय विजय' आदि।

काव्य–संग्रह– 'प्रेम फुलवारी', 'प्रेममाधुरी', 'प्रेममालिका'

पत्र–पत्रिकाएँ – 'कवि वचन सुधा', 'हरिश्चन्द्र मैगजीन', 'बालाबोधिनी' आदि।

भाषा–शैली – 1. विचारात्मक एवं व्यंग्यात्मक शैली,

2. सरलता सहजता एवं बोधगम्यता
3. तत्सम, तद्भव, देशज एवं विदेशी शब्दावली
4. मुहावरे एवं लोकोक्तियों का प्रयोग
5. पुनरूत्थानवादी एवं आधुनिकतावादी शैली

पाठ–परिचय

पाठ में दिया गया आलोचनात्मक निबन्ध भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी ने ददरी मेले के अवसर पर बलिया में एक उत्साहवर्द्धक भाषण एवं व्याख्यान के रूप में प्रस्तुत किया था। इस निबंध में साहित्यकार ने भारतीय दुर्दशा के लिए अंग्रेजी औपनिवेशिक साम्राज्यवाद को जिम्मेदार माना है। तो दूसरी तरफ भारतीय नागरिकों में विद्यमान आलस्य, अशिक्षा, अकर्मण्यता एवं दिशा हीनता को भी जिम्मेदार माना है। इस निबन्ध में भारतेन्दु ने भारतीयों में भारतीय अस्मिता को स्थापित करने के लिए ललकारा है।

स्मरणीय बिन्दु :– भारतेन्दु ने भारतवासियों में नेतृत्व क्षमता को विकसित करना चाहा है। कई दशकों की गुलामी ने हमारी नेतृत्व क्षमता को हतोत्साहित किया है। इसलिए हम अंग्रेजीं के पिछलग्गू बन गये हैं भारत को सांस्कृतिक स्वतंत्रता तभी

मिलेगी जब हम अपना नेतृत्व स्वयं करना सीख लें। इस सृजनात्मक विचार धारा का सकारात्मक परिणाम हमें गाँधी, सुभाषचन्द्र बोस, जवाहर लाल नेहरू, पटेल एवं अम्बेडकर आदि के लोकतांत्रिक नेतृत्व में दृष्टि गोचर होता है।

– भारतेन्दु जी अंग्रेजों के विरोधी तो थे लेकिन पाश्चात्य आधुनिकतावादी संस्कृति के नहीं। उन्होंने बलिया के कलेक्टर राबर्ट साहब की खुलकर प्रशंसा की है, साहित्यकार ने अकबर, बीरबल, टोडरमल की धार्मिक सहिष्णुता, तीक्ष्ण नेतृत्व क्षमता एंव भूराजस्व नीतियों के कारण, उनकी सराहना की है। भारतेन्दु ने भारतवासियों की तुलना रेलगाड़ी के डिब्बों से की है। इसका तात्पर्य यह है कि हम भारतवासी बिना नेतृत्व के चल ही नहीं सकते । वे धार्मिक, पौराणिक उदाहरणो द्वारा सिद्ध करते हैं कि अगर भारतीयों को कोई बल एवं पराक्रम याद दिला दे तो ये सभी कार्य सम्पन्न कर सकते हैं

– भारतेन्दु इतिहास के मर्मज्ञ चित्रक है। इन्हें इतिहास की गतिशील नब्ज की पहचान थी। भारत गुलाम क्यों हुआ? भारत के विभाजित होने के कारण क्षेत्रवाद, अकर्मण्यता, धर्मभीरुता एवं आलस्य आदि कुप्रवृत्तियों के कारण ही भारतीय अस्मिता खतरे में पड़ी। इसके अतिरिक्त जमींदारी प्रथा एवं सामन्तवाद, जैसी भयावह कुरीतियों ने भी भारतीय राजनीतिक प्रशासनिक व्यवस्था को चकनाचूर किया।

– भारतेन्दु पुनरुत्थानवादी, साहित्यकार हैं। इनके विचारों में आधुनिकतावाद के साथ ही भारतेन्दु जी पुनरूत्थानवादी, समाज–सुधारक, साहित्यकार हैं। उनके समय में आम जनता अपने देश भारत के अतीत का गौरव भूल–सी ही गई थी। ये सब जान बूझकर नहीं हुआ था बल्कि अंग्रेजी शासन उनका भय, आतंक, दमनकारी रवैया और भारतीयों का अशिक्षित होना इसके लिए जिम्मेदार था। अतः भारतेन्दु जी के सामने सबसे मुख्य प्रश्न था। समस्या यही थी कि भारतीयों का पुनर्जागरण किया जाए अर्थात् भारत के लोग जो अतीत का गौरव भारत का महान इतिहास भूल गए हैं उसे नाटकों रंगमंचीय कला के माध्यम से बताया जाए। अतः वे अपने नाटकों का कथ्य चयन भी इसी प्रकार का रखते थे। तभी इनके विचारों में आधुनिकतावाद के साथ अतीतोन्मुखी परम्परा का बोध मिलता है। वे भारतीयों को विश्वस्तर पर उनका योगदान याद दिलाते हैं। वे बताते हैं कि भारतीयों ने खगोलशास्त्र, गणितीय प्रणाली, चिकित्सा शास्त्र एवम् रसायनशास्त्र, दर्शन, अध्यात्मवाद, संस्कृति आदि क्षेत्र में विश्वस्तर पर योगदान दिया है। इसी कारण भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता है। अतः आज हमें फिर से अपने योगदान अपने ज्ञान, ताकत को याद करने की जरूरत है। अपने पौरुष को पहचानने की आवश्यकता है। वे आगे यह बताते हैं, कि भारत विश्व विकास की दौड़ में इसी अज्ञानता की वजह से पिछड़ रहा है। और हम अपनी पुरातन रूढ़ियों की वजह से विकास की दौड़ में पिछड़ गए है।

– भारतेन्दु के अनुसार मानव जीवन अत्यन्त दुर्लभ एवं अति महत्वपूर्ण है। मनुष्य को कायरों की भाँति जीवन नहीं व्यतीत करना चाहिए। बल्कि उसको समग्र

सम–विषय अवसरों का लाभ उठाना चाहिए। इस विचारधारा का तात्पर्य यह है कि सम्पूर्ण भारतवासियों को भारतवर्ष के समग्र विकास एवं उन्नति हेतु प्रयत्नशील रहना चाहिए। भारतेन्दु जी ने राष्ट्र हित के लिए व्यक्तिगत हित को महत्व नहीं दिया। यह साहित्यकार का प्रगतिशील दृष्टिकोण है।

– भारतेन्दु जी ने भारतीय संस्कृति की अस्मिता के उद्वार हेतु निवृत्तिमूलक एवं पलायनवादी विचारों के स्थान पर प्रवृत्ति मूलक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने पर बल दिया। उनके अनुसार भारत में जितना कोई निकम्मा होता है उसे उतना ही बड़ा अमीर समझा जाता है हालांकि इस कुप्रवृत्ति ने आज भी भारत को तोड़ने का प्रयास किया है हमारे यहाँ मानसिक श्रम की अपेक्षा शारीरिक परिश्रम को कम महत्व दिया जाता है। लेकिन राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने मानसिक एवं शारीरिक दोनों प्रकार के श्रम को समान महत्व देकर श्रमजीवी संस्कृति को समेकित धरातल प्रदान किया है। भारतेन्दु जी भारतवासियों को समय के साथ चलने के लिए कहते हैं। वे चाहते थे कि भारतवासी अपनी आवश्यकताओं के लिए किसी दूसरी ताकतों का मोहताज न रहे।

– भारतेन्दु जी ने भारतवासियों में उत्साह का संचार करने के लिए ऐतिहासिक, धार्मिक एवं पौराणिक साक्ष्यों को प्रस्तुत किया है। भारतेन्दु जी इतिहास की गम्भीर अवधारणा की जानकारी रखते थे। उपर्युक्त तथाकथित सन्दर्भों का प्रयोग भारतेन्दु जी ने सांस्कृतिक राष्ट्रीय चेतना को समेकित रूप में किया है। भारतेन्दु जी भारत के कण–कण में उन्नति एवं अभ्युत्थान देखना चाहते थे। वे चाहते थे कि भारत का सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, दार्शनिक, मानवीय, धार्मिक एवं आर्थिक आदि क्षेत्रों में सर्वांगीण विकास सम्पन्न हो । भारतेन्दु जी ने भारतीय समस्याओं का बहुत सूक्ष्म विचार विश्लेषण किया है। वे समस्या मुक्त भारतीयता के हिमायती थे।

– वे धर्मनीति के समर्थ हिमायती थे। लेकिन वे धर्माधंता, साम्प्रदायिकता, क्षेत्रवाद आदि तात्कालिक दोषों से मुक्त होने की तरफ भी इशारा करते हैं। भारतेन्दु के विचारों में देशभक्ति के साथ ही साथ राजभक्ति की प्रार्थना आखिल भारतीय राष्ट्रवादियों के लिए खटकती है। वे तीज–त्योहार की नैतिक, मानवीय एवं वैज्ञानिक व्याख्या के हिमायती थे। वे नारी शोषण, दलित शोषण किसी भी कुप्रवृत्ति के खिलाफ थे। भारतेन्दु सौहार्द साम्प्रदायिक के कारण ही मुसलमानी–संस्कृति को पूर्ण तार्किकता एवं आधुनिकता से जोड़ना चाहते थे। वे भारतीय जनता को किसी भी प्रकार के कृपा पात्र के मोहताज नहीं रखना चाहते थे।

सप्रसंग व्याख्या

भाइयो, राजा–महाराजों.....रसातल ही पहुँचोगे।

प्रसंग – प्रस्तुत गद्यांश हिंदी साहित्य में आधुनिक युग के प्रवर्तक भारतेन्दु हरिश्चन्द द्वारा रचित निबंध 'भारत वर्ष की उन्नति कैसे हो सकती है?' से अवतरित है।

संदर्भ–लेखक उन उपायों का उल्लेख करता हैं जिनसे भारतवर्ष की उन्नति हो सके।

व्याख्या – लेखक आम लोगों को संबोधित करते हुए कहता है कि उन्हें अपनी तरक्की के लिए राजा–महाराजा अर्थात् उच्च संपन्न वर्ग की ओर नहीं देखना चाहिए। वे तुम्हारे लिए कुछ नहीं करेंगे। उनसे कोई भी आशा रखना व्यर्थ है। पंडित जी भी अपनी कथा में देश की समृद्धि और बुद्धि बढ़ाने का कोई तरीका नहीं बताएंगे। उन्हें तो सिर्फ अपने स्वार्थ को देखना है और आपको ठगना है। तुम्हें स्वयं ही कमर कसकर तैयार होना होगा और आलस्य को छोड़ना होगा। जरा सोचो, तुम कब तक जंगली, बुद्धु, मूर्ख और डरपोक कहलाओगे? अब इन बातों से अपना पीछा छुड़ाओं। तरक्की की दौड़ में तुम भी भाग लो और आगे निकलकर दिखाओ। यदि तुम इसमें पीछे रह गए तो फिर तुम्हें कहीं ठिकाना नहीं मिलेगा । यह मौका बार–बार नहीं मिलने वाला है। इसका लाभ उठाओं। यदि अबकी बार भी पिछड़ गए तो फिर नीचे की ओर गिरते चले जाओगे । इस पतन की कोई सीमा नहीं है लेखक लोगों को तरक्की की दौड़ में पूरी लगन के साथ दौड़ने के लिए प्रेरित कर रहा है

विशेष – 1. प्रस्तुत गद्यांश प्रेरक है

2. स्वावलंबी बनने की प्रेरणा दी गई है
3. रामचरितमानस की चौपाई का अंश देकर अपने कथ्य को सशक्त बनाया गया है– ''फिर कब राम जनकपुर है''
4. खड़ी बोली का प्रयोग किया गया है।
5. भाषा सरल और सुबोध है।

अभ्यास–प्रश्न

1. भारतेन्दु के समय हिन्दुस्तान की दशा कैसी थी?

उत्तर– भारतेन्दु जी के समय देश की सामाजिक धार्मिक, राजनैतिक, आर्थिक स्थिति पिछड़ी हुई थी। देश पर अंग्रेजों का शासन था। वो हमारा सारा कच्चा माल सस्ते दामों पर खरीदकर अपने देश भेजते थे। और वहाँ का माल हमारे देश में मनमानी कीमत पर बेचते थे। जिससे हमारे उद्योग धंधे ठप्प हो गए, खेती बिगड़ गई, आर्थिक स्थिति कमजोर होने लगी। इन सभी का देश की आम जनता पर सबसे ज्यादा प्रभाव पड़ा। क्योंकि उनका दोहरे स्तर पर शोषण हो रहा था। एक तो उच्च वर्ग, सामंतवादी सोच के कारण दूसरा अंग्रेजी शासन के रूप में समाज में। समाज में विषमताएँ थी बहुत सारी कुरीतियाँ जैसे अंधविश्वास, जादू–टोना, जातिप्रथा, अनमेल विवाह, छूआ–छूत, धर्म के आधार पर भेदभाव, दलित समस्या स्त्रियों की दीन हीन दशा, बाल–विवाह,

अशिक्षा, विधवा पुनर्विवाह ना होना आदि। इस प्रकार देखा जा सकता है कि इस समय में समाज राजनीति आर्थिक क्षेत्र, धार्मिक क्षेत्र प्रत्येक स्तर पर भेदभाव, शोषण अन्याय, हीन भावना आदि व्याप्त थी।

2. देश का रुपया और बुद्धि बढ़े, इसके लिए क्या करना चाहिए?

उत्तर– देश का रुपया और बुद्धि बढ़े इसके लिए लोगों को राजा–महाराजाओं का मुँह देखना बंद करना होगा अर्थात् उन पर निर्भरता खत्म करनी होगी। अपने बल के भरोसे काम करना होगा। पंडित जी की कथा से भी यह काम नहीं हो सकता । हमें अपने आप ही कमर कसनी होगी, आलस्य छोड़ना होगा। हमें अब जंगली पशु, मूर्ख और कमजोर नहीं कहलवाना होगा। हमें रुपया पाने की होड़ में आगे बढ़ना होगा। एक बार पीछे पड़ने पर फिर उठ नहीं सकेंगे। इस समय में सरकार का राज्य पाकर और उन्नति का इतना सामान पाकर भी न सुधरे तो फिर कभी सुधर नहीं पाएंगे। यह सुधार भी ऐसा हो जो सभी क्षेत्रों में उन्नति हो। हमें ऐसी सभी बातों को छोड़ना होगा जो हमारी उन्नति के रास्ते में काँटे बिछाती हैं। हमें अपने सुख को होम करना होगा।

अभ्यास हेतु प्रश्न :–

1) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र किस काल के साहित्यकार हैं?
2) भारतेन्दु ने अंग्रेजी साम्राज्यवाद की आलोचना क्यों की है?
3) भारतेन्दु ने अपने इस कालजयी निबन्ध में भारतीय अतीत का समर्थन क्यों किया है?
4) भारतेन्दु ने भारतीयों को आलसी क्यों कहा है?
5) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र हिन्दी साहित्य के इतिहास में क्यों चर्चित है?
6) भारतेन्दु ने स्वदेशी विचारधारा का समर्थन क्यों किया?
7) भारतेन्दु भारत में किस प्रकार का विकास चाहते थे?
8) भारतेन्दु ने राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता के लिए साम्प्रदायिक सद्भाव को क्यों आवश्यक माना है?
9) भारतेन्दु जी के धार्मिक विचारों पर प्रकाश डालिए?
10) भारतेन्दु को आधुनिक कबीर की संज्ञा क्यों दी जाती है?
11) भारतेन्दु भारत को कैसा बनाना चाहते थे?

12) भारतेन्दु की राष्ट्रवादी विचारधाराओं पर प्रकाश डालिए?

13) भारतेन्दु ने इस निबन्ध में भारतीय समाज की जीती–जागती तस्वीर प्रस्तुत की है। कैसे?

व्याख्या हेतु अनुच्छेद :–

1) ''हमारे हिन्दुस्तानी लोग.....क्या नहीं कर सकते ।''

2) ''आर्य लोग हिन्दुस्तान.....प्रतिदिन बैठे।''

3) ''हम क्या उन्नति करे.....काँटों को साफ किया।''

4) ''मुसलमान भाईयों.....जी दुखाने वाली हो, न करे।''